कागज़ के फ़ूलों का पेड़

थाईलैंड की एक लोककथा

कागज़ के फ़ूलों का पेड़

थाईलैंड की एक लोककथा

कागज़ के फ़ूलों का पेड़
थाईलैंड की एक लोककथा

एक ज़माने में एक छोटी लड़की रहती थी.

उसका नाम मिस मून था.

वो एक छोटे से गांव में रहती थी जो शहर से बहुत दूर था.

नीले आसमान के विस्तार के नीचे वहां पर

मीलों तक धान के हरे खेत फैले थे.
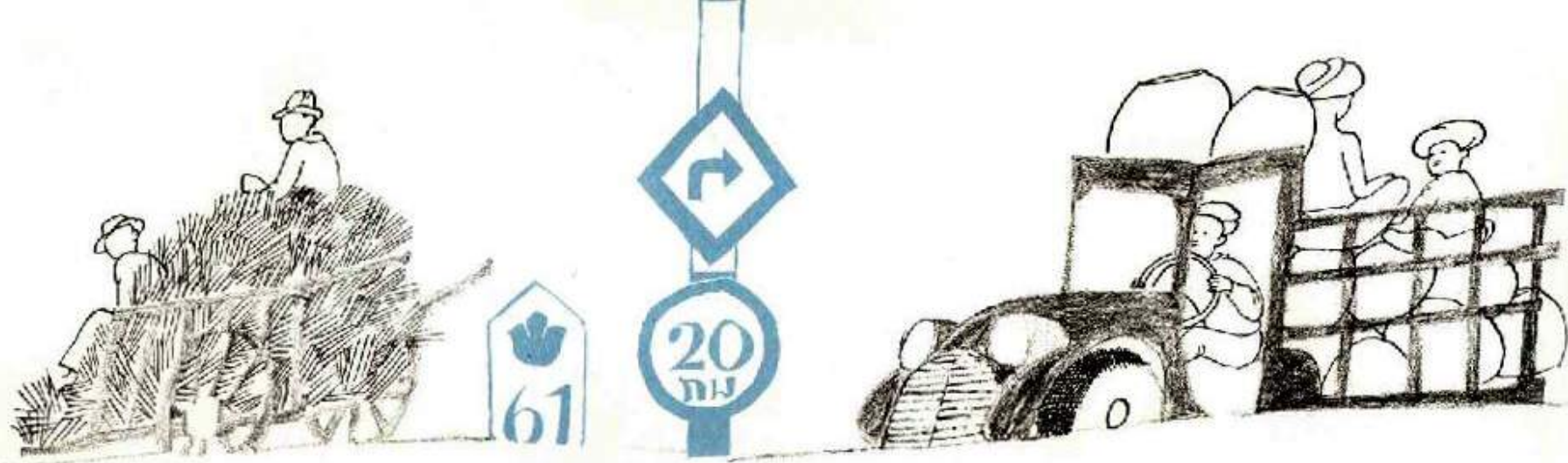
दोपहर के समय जब गांव में शांति होती थी, तब खेतों में गर्म हवा के झोके बहते थे.
तब मिस मून अपने छोटे भाई को लेकर बाहर आती थी.
फिर दोनों सड़क पर शहर से आती हुई कारों और ट्रकों को निहारते थे.

एक दिन सड़क पूरी तरह से वीरान और शांत थी,
और आसमान में सूरज बहुत तेज़ी से चमक रहा था.
तब मिस मून को दूरी पर एक आदमी दिखाई दिया.
वो चलते-चलते हांफ रहा था और ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा था.
उसके कंधे पर एक बांस टिका था जिससे कागज़ के रंगीन टुकड़े लटके थे.
कागज़ के टुकड़े हवा में तेज़ी से फड़फड़ा रहे थे.
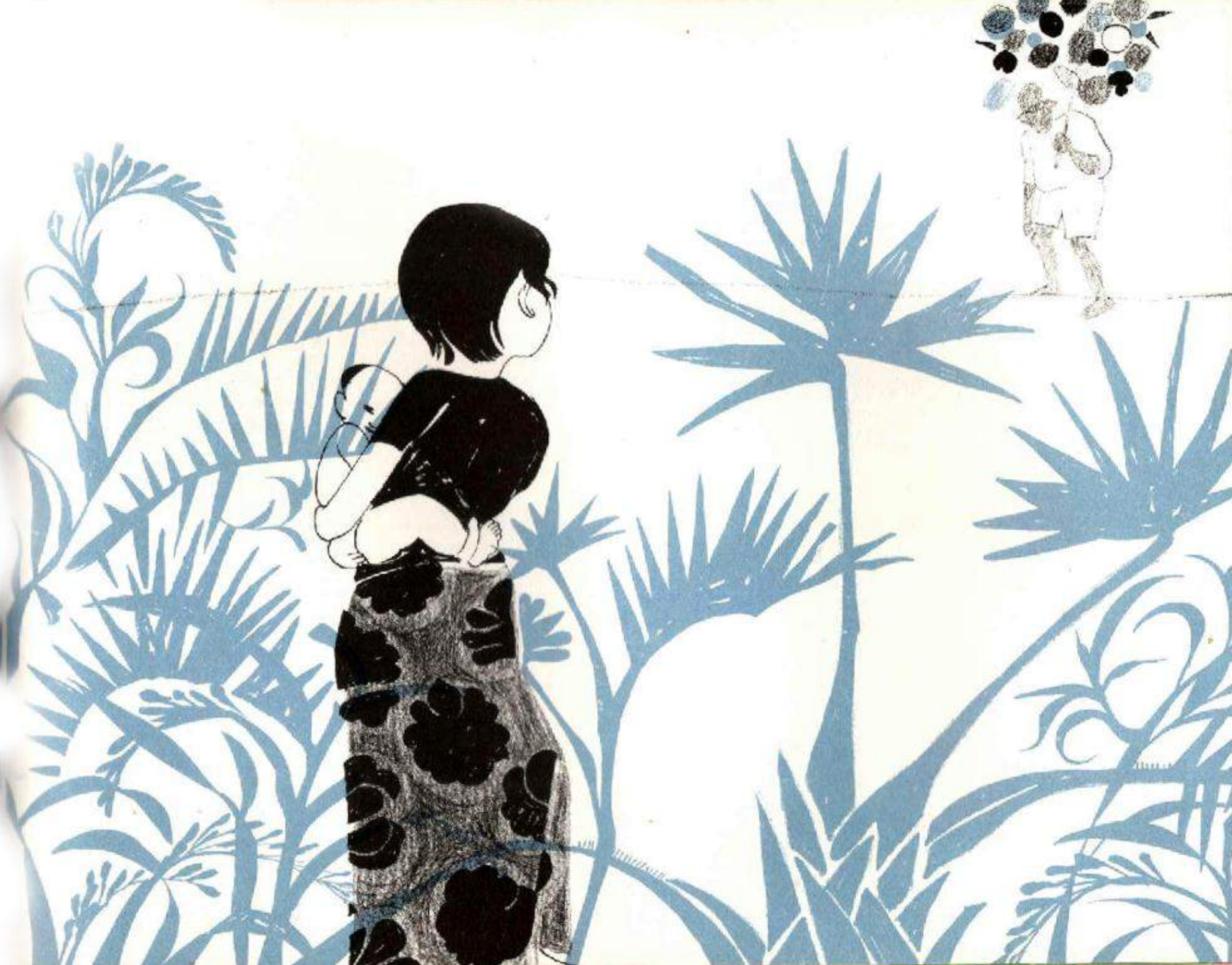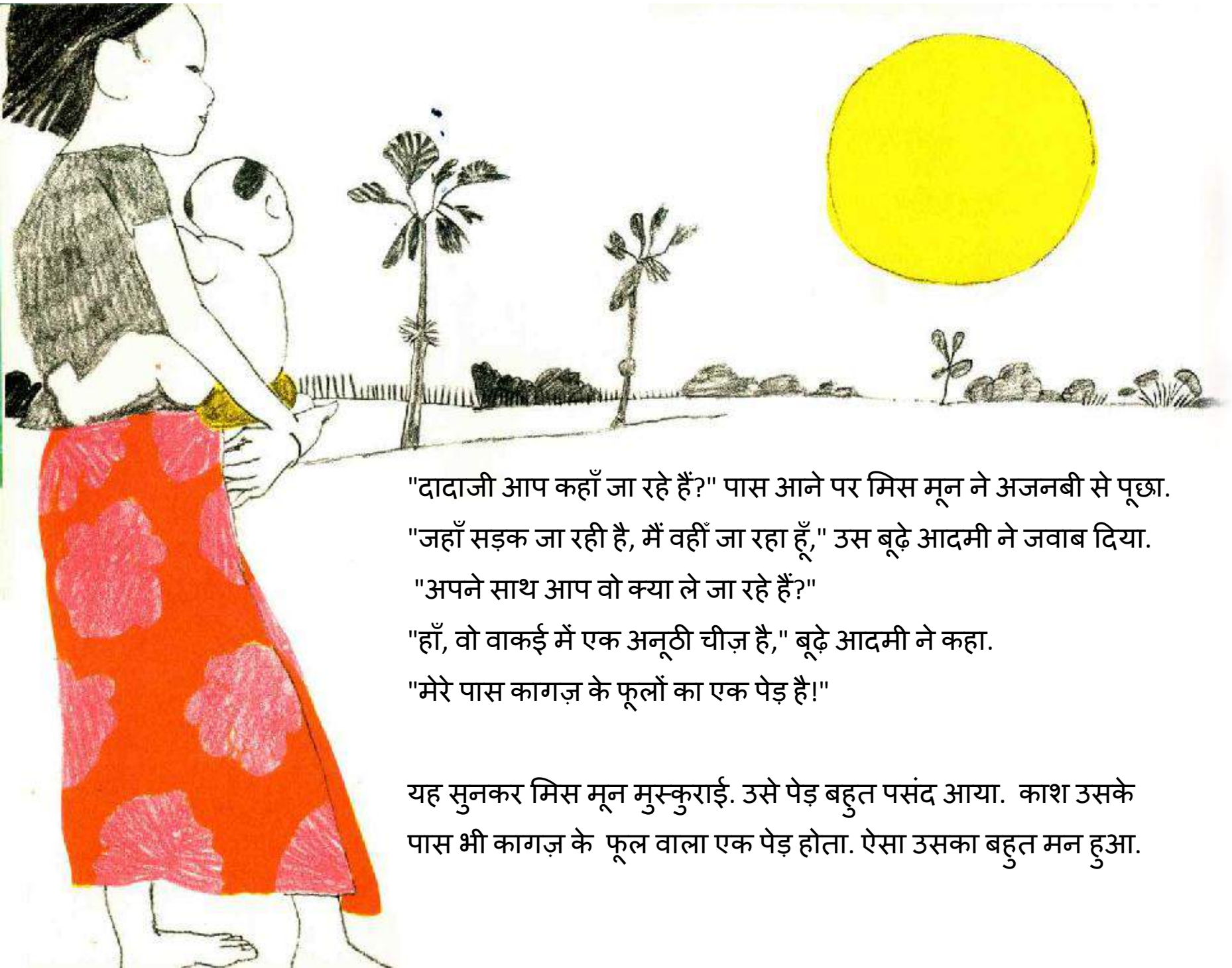
"दादाजी आप कहाँ जा रहे हैं?" पास आने पर मिस मून ने अजनबी से पूछा.

"जहाँ सड़क जा रही है, मैं वहीं जा रहा हूँ," उस बूढ़े आदमी ने जवाब दिया.

"अपने साथ आप वो क्या ले जा रहे हैं?"

"हाँ, वो वाकई में एक अनूठी चीज़ है," बूढ़े आदमी ने कहा.

"मेरे पास कागज़ के फूलों का एक पेड़ है!"

यह सुनकर मिस मून मुस्कुराई. उसे पेड़ बहुत पसंद आया. काश उसके पास भी कागज़ के फूल वाला एक पेड़ होता. ऐसा उसका बहुत मन हुआ.
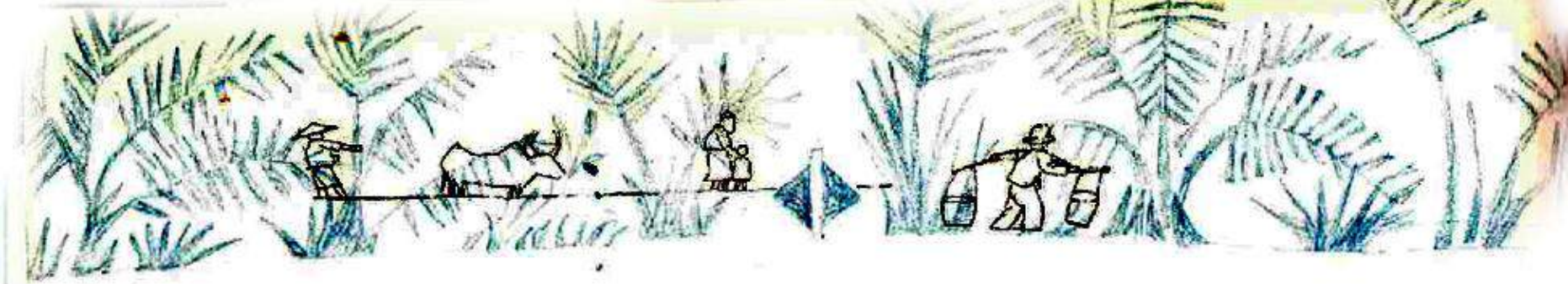
"कितना सुन्दर है यह पेड़!" उसने बूढ़े आदमी से कहा.

"कागज़ के वो तमाम फूल सूरज की रोशनी में चमक रहे हैं. काश मेरे पास भी ऐसा एक पेड़ होता."

"एक तांबे के सिक्के से तुम चाहो तो दो फूल खरीद सकती हो," बूढ़े आदमी ने कहा.

"हो सकता है उनमें से एक में बीज हो. अगर तुम उस बीज को बोओगी, तो शायद तुम अपने लिए भी एक कागज़ के फूलों का पेड़ ऊगा पाओ."

"पर मेरे पास तो एक भी सिक्का नहीं है," मिस मून ने दुखी होते हुए कहा.

बूढ़े आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, "फिर मुझे तुम्हें एक फूल देना ही पड़ेगा."

फिर उसने उस लड़की को सबसे छोटा एक फूल दिया. "देखो बेटी, इसमें एक बीज भी है," उसने धागे से लटके बीज की तरफ इशारा किया. "तुम इसे ज़रूर बोना. क्या पता इसमें से एक पेड़ निकल आये. मैं पक्की तौर पर तो नहीं कह सकता हूँ. पर हो सकता है. और नहीं भी हो सकता है."

मिस मून ने उस बूढ़े आदमी का शुक्रिया अदा किया. "इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद."

"देखो अभी यह पेड़ नहीं है. अभी यह बस एक फूल है, और वो भी कागज़ का फूल," बूढ़े ने जाते-जाते हाथ हिलाकर लड़की से बाई-बाई किया.

फिर मिस मून ने उस कागज़ के फूल को ज़मीन की गहराई में बोया. धूप से सुरक्षा के लिए उसने उसके ऊपर फूस की एक छत बनाई. फिर वो उस नन्हें बीज के उगने और ज़मीन से उसके सर उठाने का इंतज़ार करने लगी.
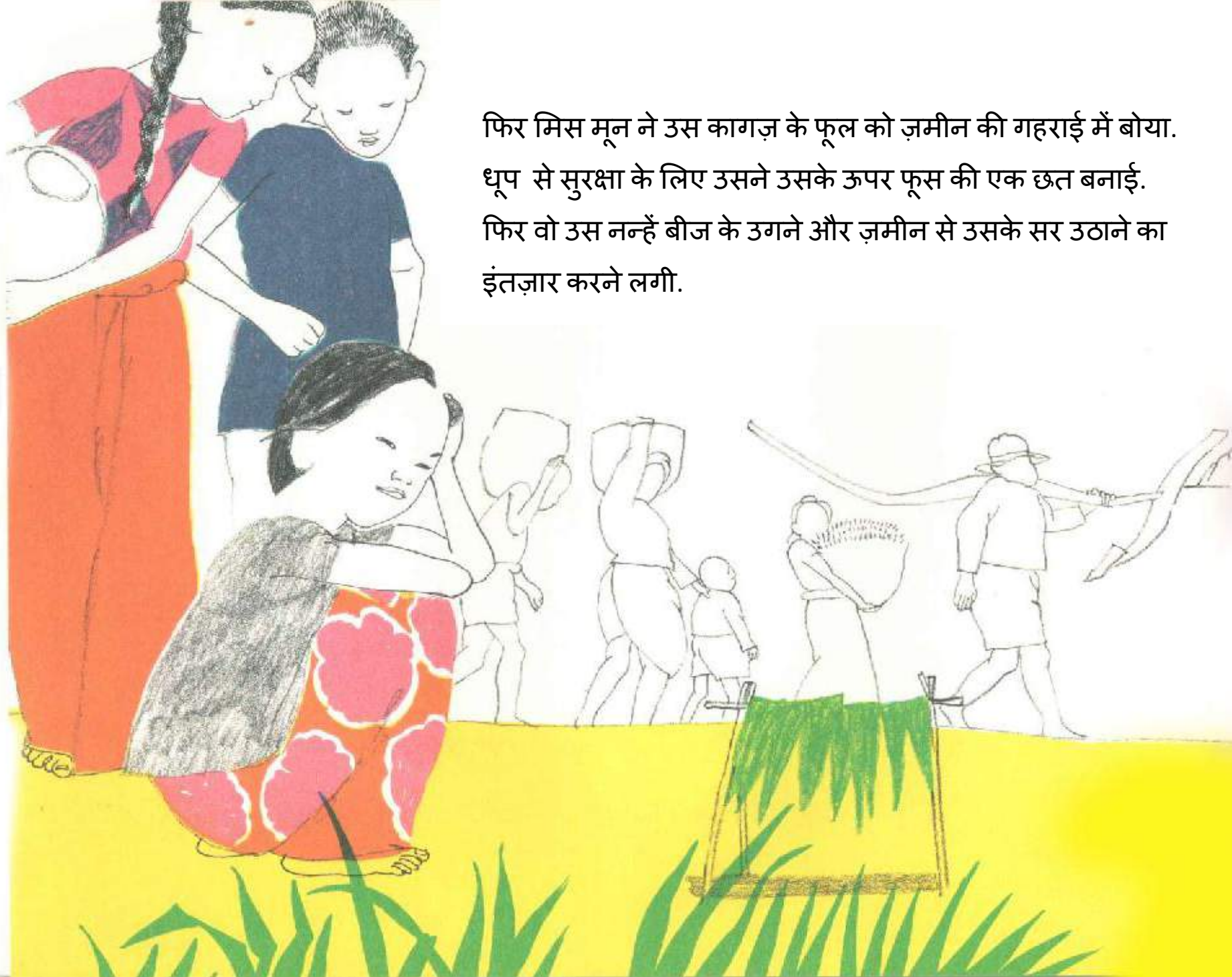
जैसे-जैसे दिन बीते वैसे-वैसे धान के खेतों का रंग हरे से भूरे में बदला.

उनके छोटे गांव के लोगों ने धान बोया और पकने के बाद उसे काटा.

दिन गुज़रते गए, कुछ दिन तेज़ धूप पड़ती, कुछ दिन बादल छाते और बारिश होती.

धीरे-धीरे करके महीने और महीने बीते. इस तरह पूरा एक साल बीत गया.
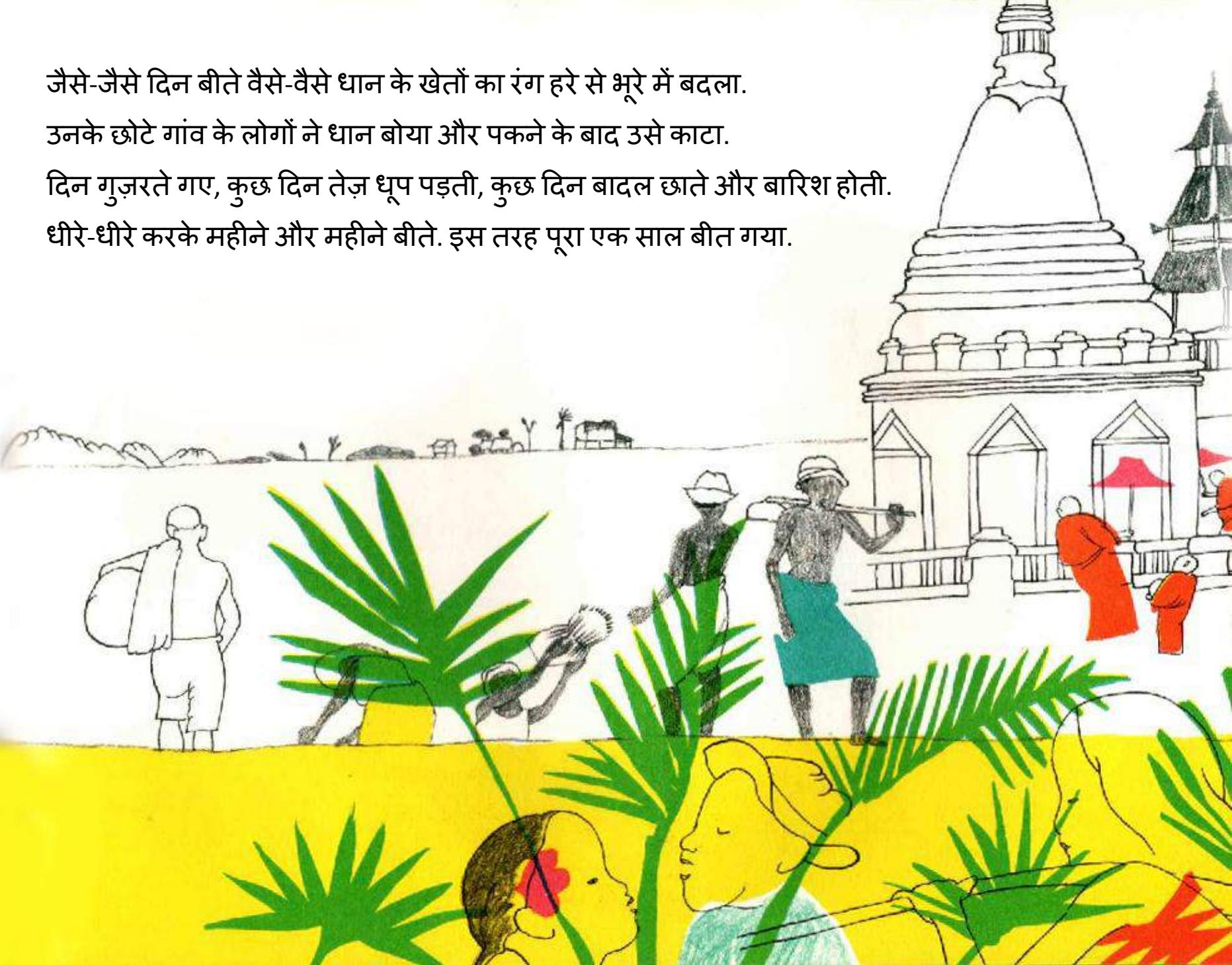
मिस मून अपने बीज के उगने का इंतज़ार ही करती रही.
गांव में सभी को यह बात बहुत मूर्खतापूर्ण लगी.

"मिस मून," उन्होंने पूछा, "क्या भला मोती से कभी पेड़ उगता है?"
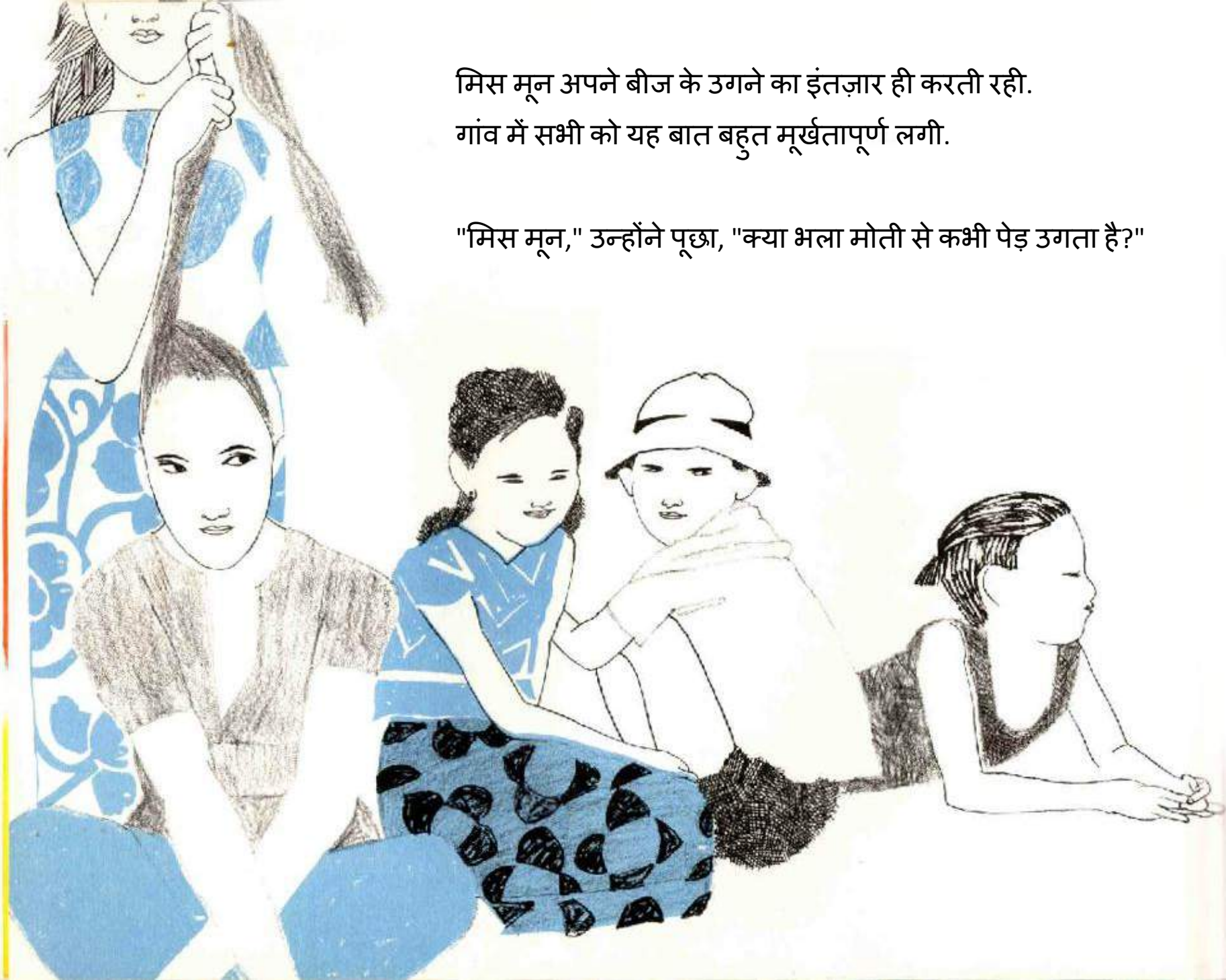
"तुम अपना समय बरबाद कर रही हो.
क्या किसी ने कागज़ के फूलों के पेड़ के बारे में कभी सुना भी है!“

पर मिस मून ने वो पेड़ अवश्य देखा था. और वो कितना सुन्दर था!
वो अभी भी उसका इंतज़ार करेगी.
उसे पूरी उम्मीद थी कि वो पेड़ ज़रूर उगेगा.
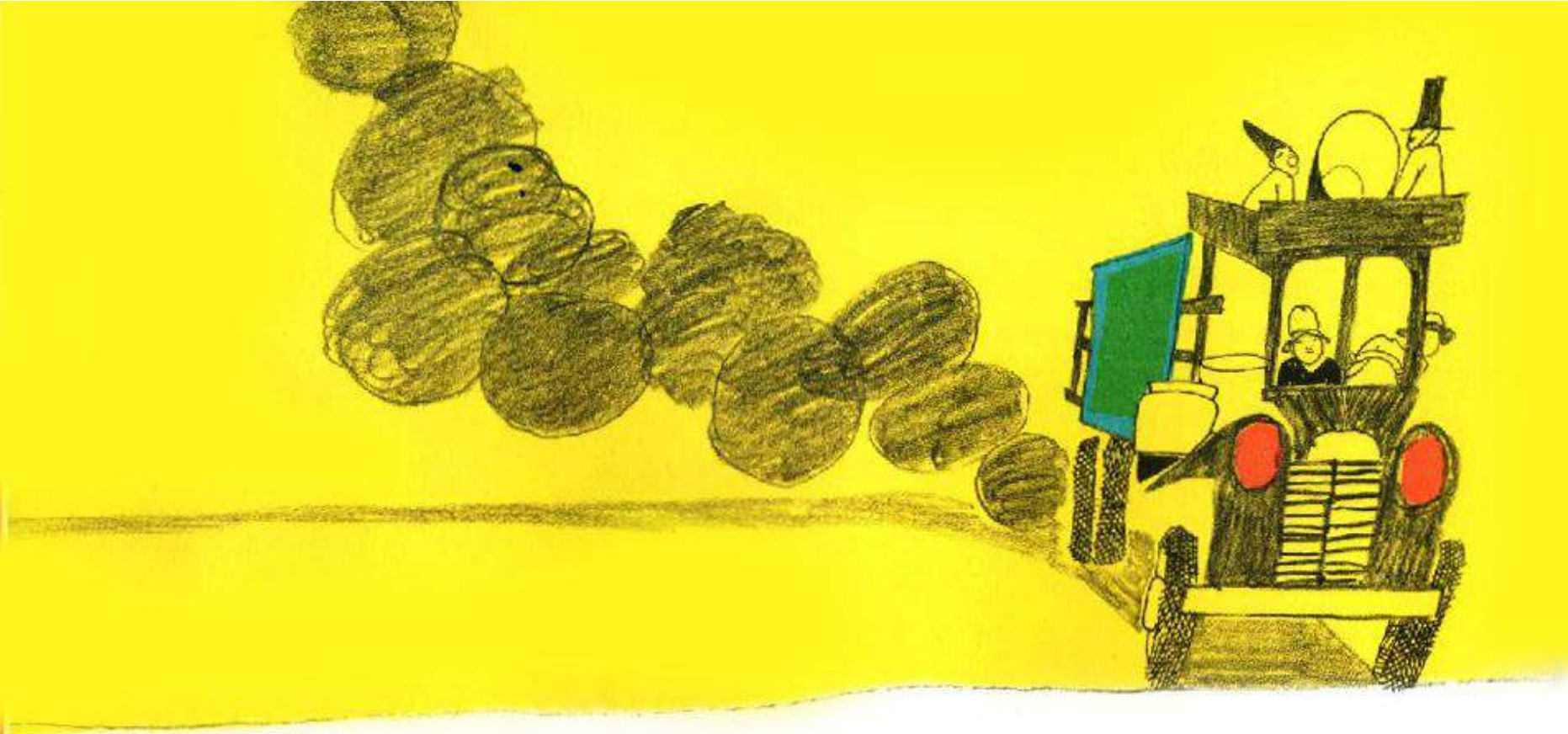
फिर एक दिन गांव के बाहर सकरी सड़क पर एक पुराना ट्रक आया.

ट्रक के अंजर-पंजर ढीले थे और वो हॉर्न बजाता हुआ आ रहा था.

कच्ची सड़क पर ट्रक से धूल के बादल उड़ रहे थे.

ट्रक सीधा उस छोटे गांव में आया.

फिर वो खड़-खड़ की आवाज़ के साथ रुका.

उसके बाद एक अजीब सा भूरे रंग का आदमी, जो चमकीले, चिथड़े कपड़े पहने था,

वो ट्रक में से नीचे उतरा.

उसने अपने दोनों हाथ हिलाए और फिर उसने वहां इकट्ठी हुई भीड़ से कहा :

"देखो भाइयों-बहनों! संगीतज्ञों, जादूगरों और मसखरों!
कुछ चांदी के सिक्के देकर आप हमारी होशियारी का कमाल देख सकते हैं."
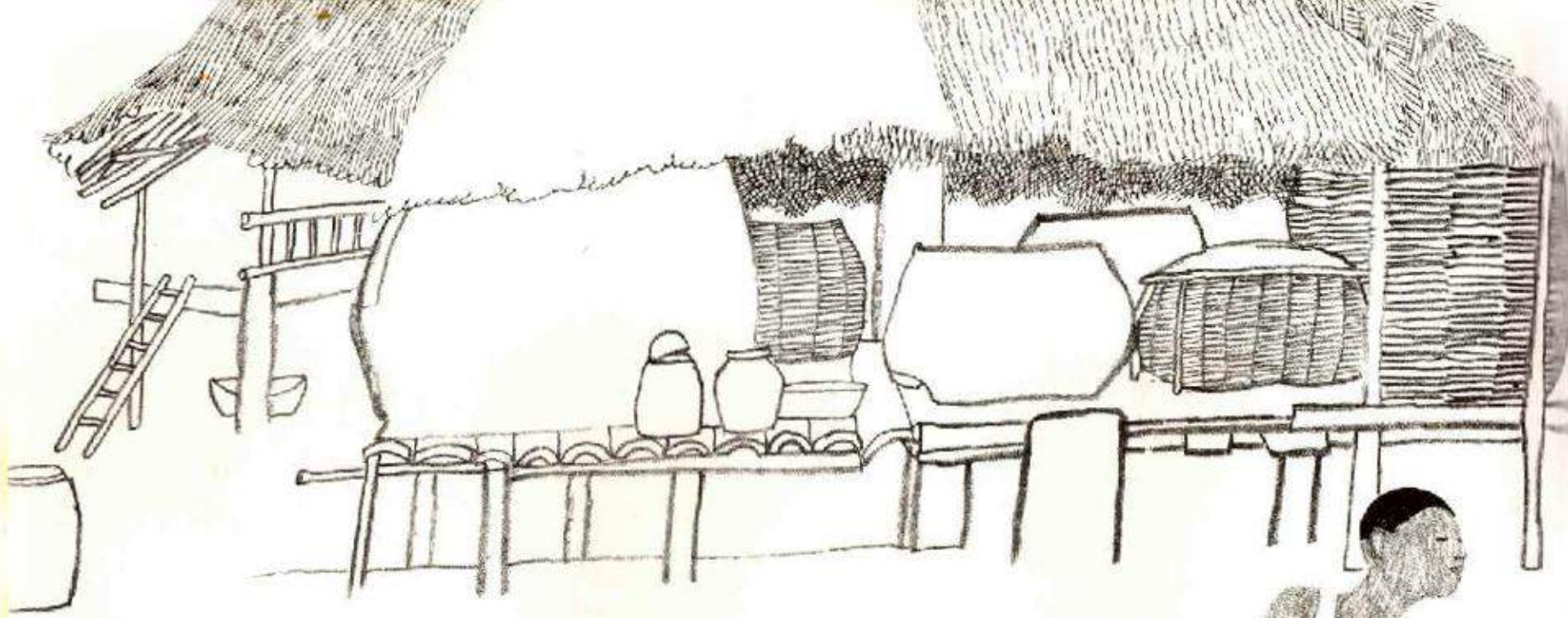
उस भीड़ में मिस मून को वही बूढ़ा आदमी भी दिखा.

उसके पास अभी भी कागज़ के फूलों वाला पेड़ था.

"दादाजी!" मिस मून ने बूढ़े से कहा, "क्या आपको मेरी याद है?

आपने अपने पेड़ में से मुझे एक फूल दिया था."

"हाँ-हाँ बेटी!" बूढ़े ने उस लड़की से कहा.

"मुझे बिल्कुल याद है."

"दादाजी," उसने बूढ़े से कहा, "मैंने आपके कागज़ के फूल के पेड़ के बीज को बोया. बिल्कुल वैसे ही जैसे आपने बताया था. फिर मैंने बहुत इंतज़ार किया पर उसमें से अभी तक कुछ भी नहीं निकला."

कुछ क्षणों के लिए बूढ़े का चेहरा उदास हुआ. "पर बिटिया मैंने तुमसे वादा तो नहीं किया था कि वो उगेगा ही. मैंने सिर्फ इतना कहा था कि शायद वो उग आए. शायद वो न उगे, और फिर शायद उग भी आए.”

उस रात, विशाल काले आसमान के नीचे
नृतकों और सफ़ेद मुंह पर सफ़ेद रंग पोते मसखरों ने
रेश्मीन कपड़े पहनकर लोगों को अपने करतब दिखाए
और लोगों का खूब मनोरंजन किया.

संगीतज्ञों ने अपने वाद्य-यन्त्र बजाए.
ढोल-मंजीरे बजे, पहले हल्के-हल्के, फिर बहुत तेज़ी से.
यह सिलसिला घंटों, पूरी रात चला. अंत में चाँद अस्त हो गया.
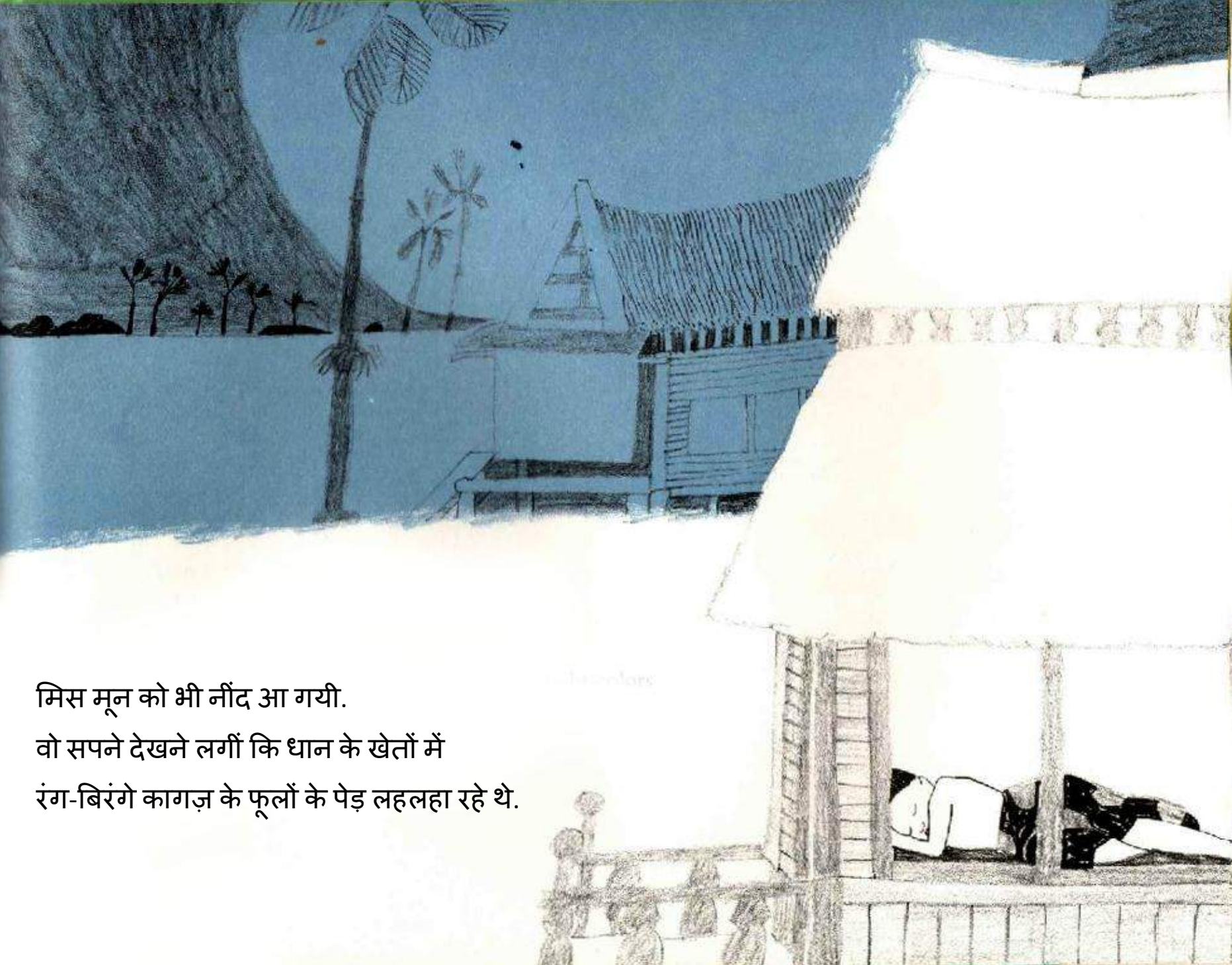
मिस मून को भी नींद आ गयी.

वो सपने देखने लगीं कि धान के खेतों में

रंग-बिरंगे कागज़ के फूलों के पेड़ लहलहा रहे थे.
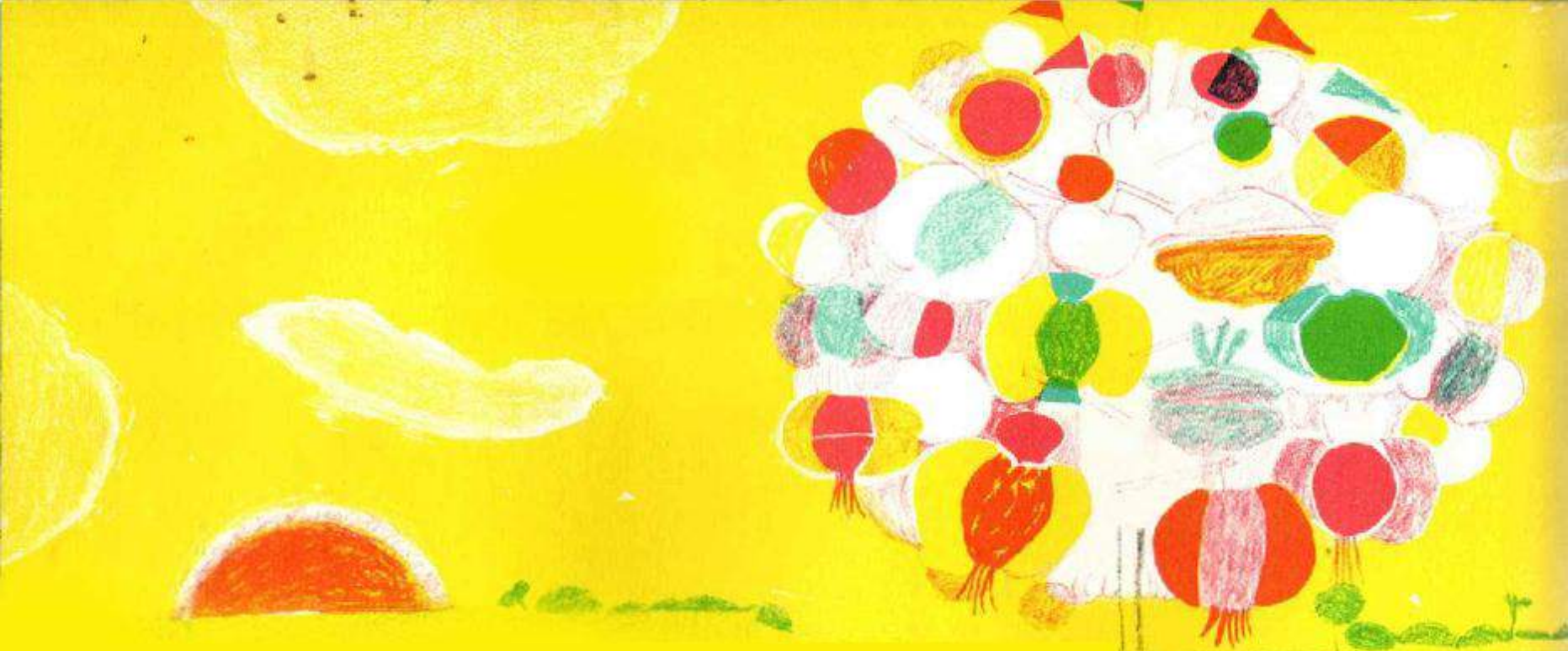
सुबह-सुबह चूल्हे की जानी-पहचानी खुशबू से मिस मून की आँख खुली.
कुछ देर के लिए उसने नए आसमान को निहारा.
और वहां सूरज की धूप में उसका कागज़ के फूलों वाला पेड़ दमक रहा था!
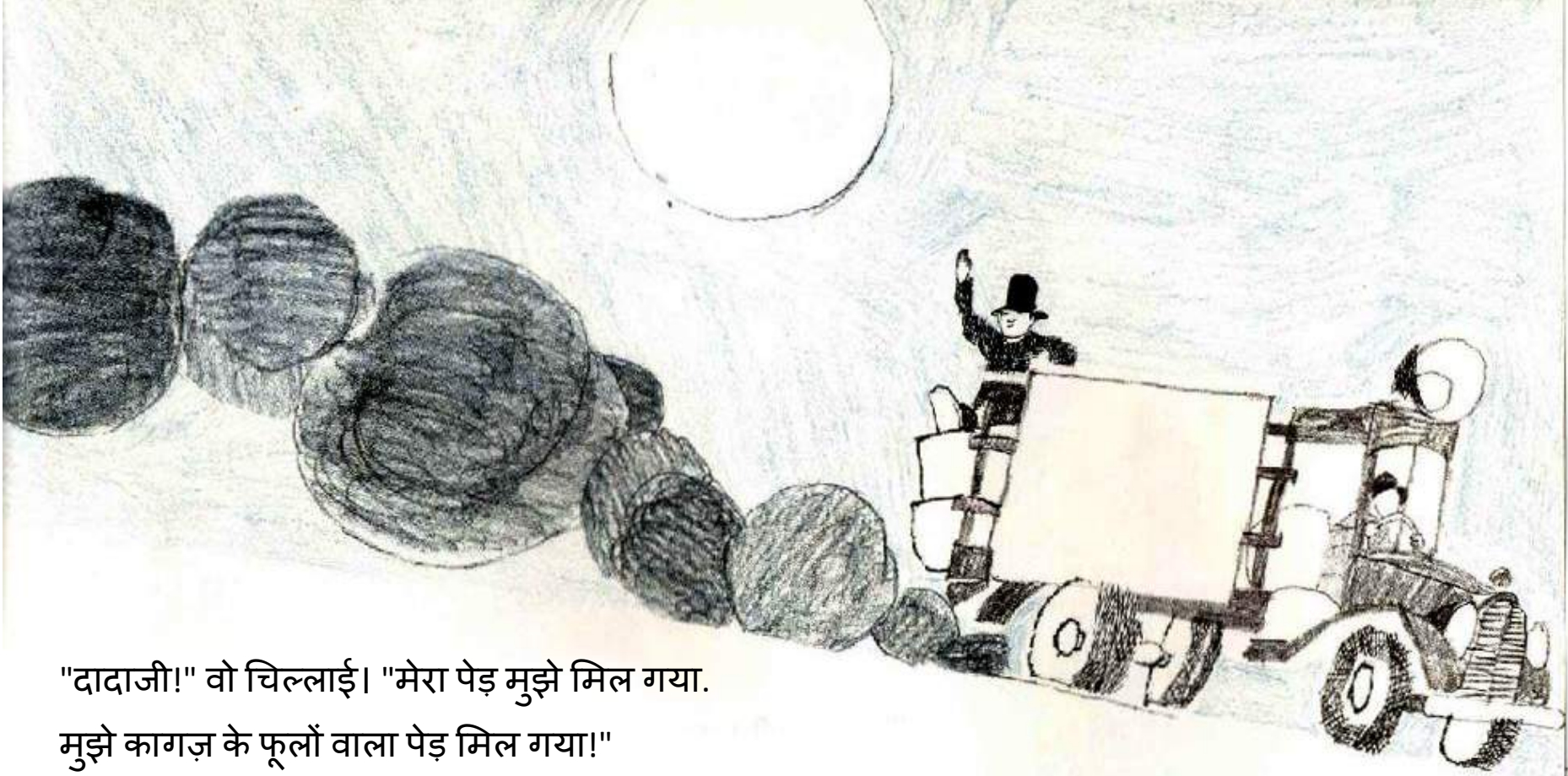
"दादाजी!" वो चिल्लाई। "मेरा पेड़ मुझे मिल गया.
मुझे कागज़ के फूलों वाला पेड़ मिल गया!"
बूढ़ा आदमी मुस्कुराया और फिर उसने चलते हुए ट्रक पर से अपना हाथ हिलाया.
"अलविदा, बिटिया," उसने कहा.
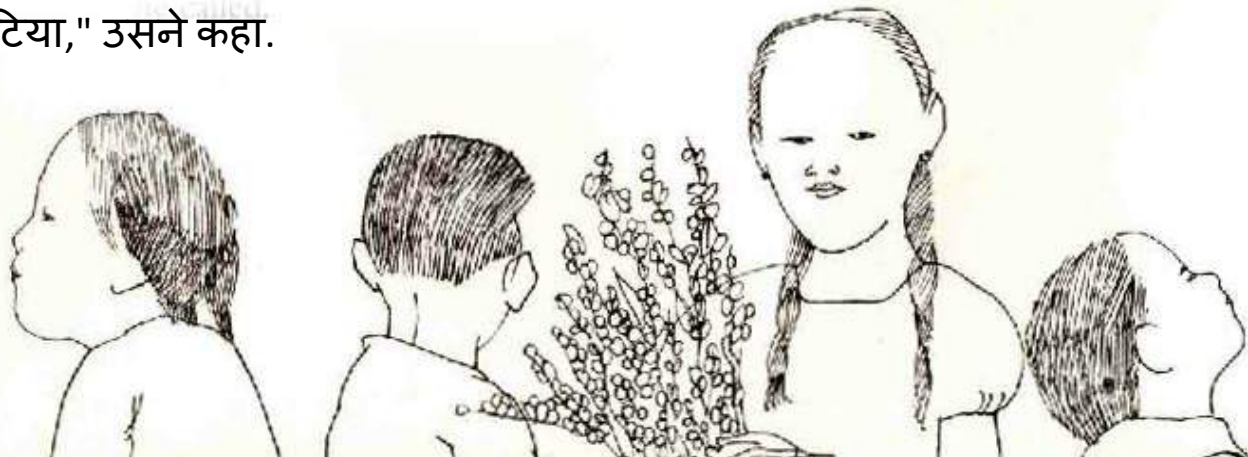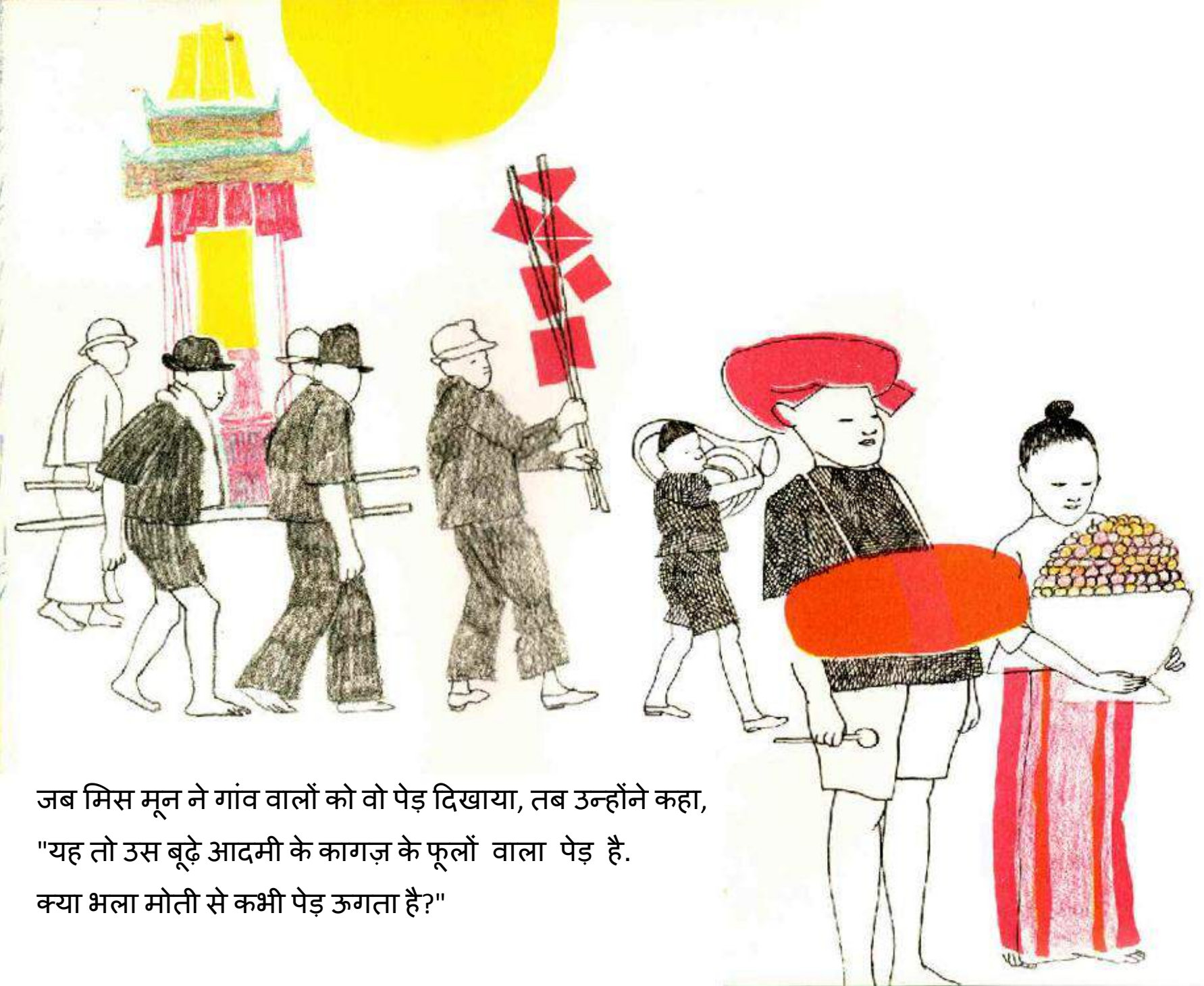
जब मिस मून ने गांव वालों को वो पेड़ दिखाया, तब उन्होंने कहा, "यह तो उस बूढ़े आदमी के कागज़ के फूलों वाला पेड़ है. क्या भला मोती से कभी पेड़ ऊगता है?"

लोग सोचते थे कि उसका पेड़ असली नहीं है.

पर मिस मून उसकी कोई परवाह नहीं थी.
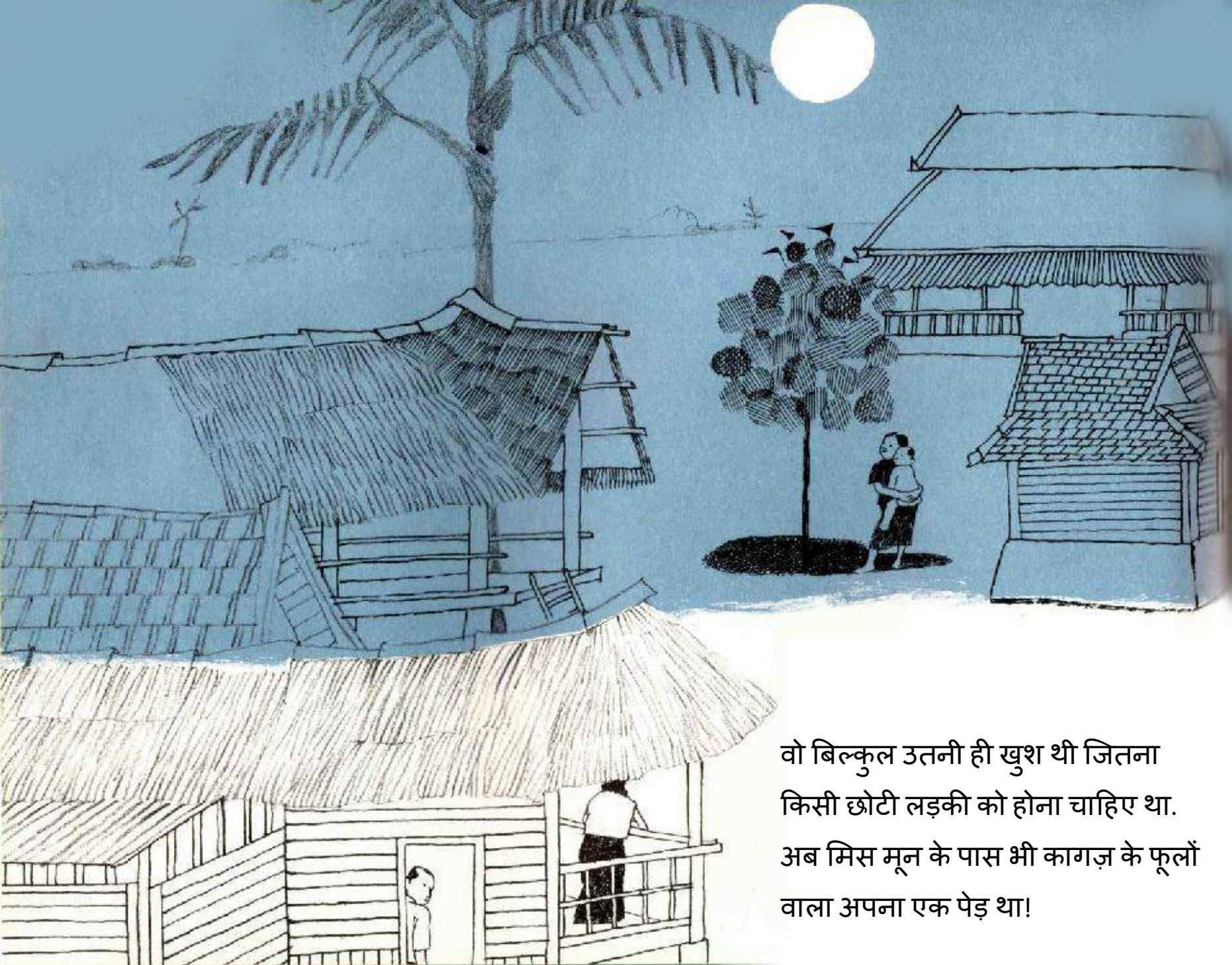
वो बिल्कुल उतनी ही खुश थी जितना
किसी छोटी लड़की को होना चाहिए था.
अब मिस मून के पास भी कागज़ के फूलों
वाला अपना एक पेड़ था!